कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह सं १९/2015

भाकृअनुप-केद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १३ से १८ अक्टूबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(४८ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	अक्टूबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)						
दिनांक	१३	१४	१५	१६	१७	१८	**साप्ताहिक परामर्श**
पंजाब							फसल गूलर निर्माण तथा गूलर खुलने की अवस्था में है। *जी. आर्बोरियम* तथा *जी. हिर्सुट म* में कपास चुनने के कार्य प्रारंभ हो चुका है। नए खरपतवार अब नहीं उग रहे हैं लेकिन खेतों में खरपतवार काफी हैं। जैसिड का प्रकोप (1.0-1.8/3 पत्तियाँ) , सफ़ेद मक्खी की संख्या (14.6-18.3/3 पत्तियाँ) तथा फूलकीट की संख्या 0.0/3 पत्तियाँ दर्ज की गई। सफ़ेद मक्खी की संख्या बढ़ रही है तथा इसकी दूसरी शीर्ष संख्या प्रारंभ हो गई है। कुछ स्थानों में देसी *जी. आर्बोरियम* में धब्बेदार सूँडी का प्रकोप नोट किया गया है। चूँकि चुनाई का कार्य प्रारंभ हो चुका है , किसानों को सलाह दी जाती है कि वे साफ-सुथरी कपास चुनें। किसानों को सलाह दी जा रही है कि वे फसल में सिंचाई बंद कर दें। राजस्थान में फसल पुष्पन तथा गूलर खुलने की अवस्था में है। रस चूसक कीटों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर तथा सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर के आस-पास है। बीटी रहित कपास में अमेरिकन सूँडी आर्थिक हानि की सीमा से ऊपर है। किसी रोग का प्रकोप फसल पर नहीं है। सनवा घास (*इकाइनोक्लोआ* प्रजाति), मोथा (सायपेरस प्रजाति), दूब घास (*सायनोडन* प्रजाति) तथा सांभी (*ट्राएंथेमा* प्रजाति) जैसे खरप तवारों का प्रकोप दर्ज किया गया है जिनके प्रबंधन के लिए सि फारिश किए गए खरपतवारनाशकों का प्रयोग किया गया।
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा							
सिरसा	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान							
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा							फसल गूलर विकास अवस्था में है। रस चूषक कीटों , *स्पोडोप्टेरा* तथा गूलर की सूंडियों का प्रकोप दर्ज किया गया। इनमें जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से अधिक था। कुछ छिटपुट स्थानों पर जीवाणु करपा का प्रकोप पाया गया है। रस चूषक कीटों के प्रबंधन के लिए बुप्रो फेजिन अथवा डायफेंथ्यूरोन का फसल पर छिड़काव करें। मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटने के लिए परिशिष्ट में दिए गए उपाय अपनाएं। डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोशक तत्वों का अनुप्रयोग इस शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में करें। इससे पौधों पर गुलरों की संख्या बढ़कर उपज-वृद्धि होगी। कपास की दो कतारों के मध्य आड़ी मेंढ बनाकर वर्षा जल का संरक्षण सुनिश्चित करें।
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
गुजरात							फसल पुष्पन , कली तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। जैसिड तथा सफेदमक्खी की संख्या आ र्थीक हानि स्तर आने पर इनके नियंत्रण के उपाय करें। **गुलाबी सूँडी :** अक्तूबर के अंत तक गुलाबी सूँडी का प्रकोप हानि के स्तर तक पहुँच जाएगा जो नवंबर तथा दिसंबर में और बढ़ेगा। गुलाबी सूँडी के
अमरेली	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	

भरूच	0	0	0	0	0	0	सर्वेक्षण के लिए फिरोमोन ट्रैप 5-6/हे. की संख्या में फसल में लगाएँ। इस सूँडी के 8 पतंग/ ट्रैप/रात्री सतत तीन रात्री अथवा सूंडियों की संख्या के साथ 10% गूलर हानि के आर्थिक स्तर पर पहुँचने पर क्वीनालफोस अथवा थायोंडीकार्ब का एक छिड़काव अक्तूबर में तथा पायरेथ्राइड अथवा लेम्डा-सायहेलोथ्रिन का छिड़काव वरीयता के आधार पर नवंबर में फसल पर करें। थायोडिकार्ब का छिड़काव बारानी कपास में एक से अधिक बार करने पर पत्तियों के लाल होने की समस्या बढ़ सकती है। गुलाबी सूँडी का ध्या न यदि अक्तूबर में नहीं दिया गया तो इस सूँडी से नवंबर-दिसंबर में भारी नुकसान हो सकता है। अक्तूबर के अंतिम सप्ताह तक पायरेथ्राइड का छिड़काव न करें। रासायनिक कीटनाशक मिश्रणों का छिड़काव कभी न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ सकता है। फसल काल को आगे 2016 तक बढ़ाने के स्थान पर फसल की दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। इससे गुलाबी सूंडियों का प्रकोप कम होगा तथा गूलर की अन्य सूंडि यों के प्रति बीटी कपास में प्रतिरोधकता टाली जा सकती है। खेतों की मेढ़ों पर पिछले वर्ष की कपास की सूखी लकड़ी के ढेर लगे हुए देखे जा सकते है। इन ढेरों को तुरंत नष्ट कर दें। घर में अथवा भण्डार में रखा हुआ कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी का स्त्रोत बन सकता है। यदि बीज इस सूँडी से क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरंत नष्ट कर दें।
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश							
खरगोन	0	0	0	0	0	0	फसल की हालत अच्छी है। यदि रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचती है तो साबुन में नीम तेल के 2.0% इमल्शन का छिड़काव करें। नत्र तथा रासायनिक उर्वरकों की अधिक मात्रा का प्रयोग न करें।
धार	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र							
नागपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	मानसून-पूर्व लगाई गई कपास गूलर खुलने , मानसून आने पर बुआई की गई कपास गूलर विकास अवस्था में तथा जुलाई में बुआई की गई कपास प्रारंभिक गूलर अवस्था में है। कपास की सभी प्रजातियों में कली झड़न देखा जा रहा है। बीटी क़िस्मों में भी कलियों का सूखना देखा जा रहा है। आगे कली- झड़न रोकने के लिए प्लानोफिक्स की सिफ़ारिश की गई मात्रा का छिड़काव करें। सात दिनों के बाद यह छिड़काव दोहराएँ। राज्य में कुछ क्षेत्रों में जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। जालना (66.85%) तथा अकोला (61.13%) जिलों में जैसिड का प्रकोप लगातार आर्थिक हानि स्तर से ऊपर बना हुआ है। जैसिड से प्र भावित गांव 10-30% है जो चन्द्रपुर में 19.73%, नांदेड़ में 16.16%, परभणी में 15.31% , नागपुर में 12.05% हैं। जिन 10.0% से भी कम गांवो मे जैसिड प्रकोप देखा गया है वे इस प्रकार हैं- गडचिरोली 9.09%, औरंगाबाद 6.83%, यवतमाल 3.88% तथा बुलढाना 0.85%, अमरावती जिलों में 28.16% गांवों में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि सीमा से ऊपर दर्ज की गई। लाल पत्ती रोग धुले के 88.54% गांवों में, परभणी के 66.88% गांवों में, अहमदनगर 43.78% गांवों में, नागपुर के 31.69% गांवों में, चन्द्रपुर के 30.26 गांवों में , गडचिरोली के 18.18% गांवों में तथा अमरावती जिले के 14.08% गांवों में पाया गया। जिन जिलों के 10% से कम गांवों में लाल पत्ती रोग पाया गया वे इस प्रकार हैं- बीड (9.86%), यवतमाल (7.76%), अकोला (6.55%) तथा वाशिम (6.59%)। जून तथा जुलाई में बोई गई *जी. आर्बोरियम* तथा *जी. हिर्सुटम* कपास में अमेरिकन सूँडी आर्थिक हानि स्तर से ऊपर पाई गई। बाटी रहित कपास में गूलर की सूंडियों का प्रबंधन करना बहुत आवश्यक है। <u>इसके</u> लिए अनुमोदित उपायों को प्रारंभ करें। जिन खतों में
वर्धा	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
चंद्रपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
यवतमाल	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
अमरावती	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
अकोला	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
बुलढाना	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
परभणी	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
नांदेड़	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
बीड़	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
वासिम	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
धुले	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
जलगांव	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
जालना	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
औरंगाबाद	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	

							मृदा नमी पर्याप्त मात्रा में है वहाँ इस अवस्था में डी.ए.पी. का अनुप्रयोग करें। इससे अधिक उपज लेने के लिए गूलर स्थापन तथा गूलर धारण अधिक होगा। मृदा नमी में कमी होने की स्थिति में 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. का पुष्पन अवस्था में छिड़काव करें। गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया तथा 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें।
तेलंगाना							फसल फलन अवस्था में है। आवश्यक होने पर नत्र व पोटाश उर्वरकों की दूसरी अथवा तीसरी विभाजित मात्रा दें। यूरिया 1-2% , पोटेशियम नाइट्रेट 1-2% तथा मेग्नेशियम कल्फेट 1.0% के साथ फसल पर सूक्ष्म पोषकतत्वों का छिड़काव करें। इससे फसल की अजैविक प्रतिबल तथा लाल पत्ती रोग की समस्या कम होगी। रस चूषक कीटों की संख्या जैसिड 0.45 से 1.35/3 पत्तियां तथा एफिड 0.15 से 1.3/3 पत्तियां दर्ज की गई। *रायजोक्टोनिया* जड़ गलन की समस्या से निपटने के लिए कापर-आक्सीकलोराइड @ 3.0ग्रा./ली. पानी की दर से घोल प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें। फफूँदजनित पत्ती धब्बों के नियंत्रण के लिए प्रोपेकोनजोल @1.0मिली./ली. अथवा मेन्कोजेब+ कर्बेंडेजिम 2.0ग्रा./ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। उच्च सापेक्षिक आद्रता तथा अधिक तापमान के कारण रस चूषक कीट तथा *स्पोडोप्टेरा* का प्रकोप देखा जा रहा है। जैसिड, सफेद मक्खी तथा *स्पोडोप्टेरा* के नियंत्रण के लिए इस परामर्शी के परिशिष्ट में दिए गए अनुमोदित उपायों के अनुसार फसल पर छिड़काव करें। पाइरेथ्राइड का प्रयोग न करें।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	
कारिंगर	0	0	0	0	0	0	
खम्मन	0	0	0	0	0	0	
करीमनगर	0	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	
कर्नाटक							भारी वर्षा की स्थिति में खेत से रुके हुए पानी की निकासी करें तथा 25किग्रा. यूरिया/एकड़ जमीन में दें। इससे गूलर झड़न की समस्या कम होगी। फसल 100 से 110 दिनों की होने पर पौधों के शीर्ष प्ररोह भाग को हाथ से तोड़ने की (विशेषत: एच x बी संकरों में) सिफ़ारिश की जाती है। इसके साथ ही फसल पर 1.0% 19:19:19 पानी में घुलनशील उर्वरक तथा 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट तथा प्लानोफिक्स का छिड़काव लाल पत्ती रोग तथा कली झड़न रोकने के लिए करें। कुछ क्षेत्रों के कुछ स्थलों में जड़ गलन की समस्या देखी गई है। इससे निपटने के लिए विटावैक्स पाउडर @ 2.0ग्रा।/ली. घोल को प्रभावित पौधों की जड़ों और आस-पास के पौधों में डालें। मिरीड मत्कुण तथा मिज कीट के प्रभावी नियंत्रण के उपाय प्रारंभ करें। इसके लिए प्रोफेनोफास, क्लोरपायरिफास अथवा क्वीनालफ़ास का फसल पर छिड़काव करें। शीर्ष कली तथा गुलर निर्माण अवस्था में गहरी काली मिट्टियों में फसल की भारी सिंचाई न करें।
धारवाड़	6	4	0	0	0	0	
हवेरी	6	10	0	0	0	0	
मैसूर	33	19	10	4	14	8	
तमिलनाडु							फसल पुष्पन अवस्था में है। दूब घास (*सायनोडन डेक्टाइलोन*), गाजर घास (*पार्थेनियम*) तथा *ट्रायन्थेमा पोर्टुलेकेस्ट्रम* खरपतवारों का प्रमुख रूप से फसल में प्रकोप दर्ज किया गया। नाशीकीटों और रोगों का प्रकोप फसल में नहीं पाया गया।
पेरंबलुर	26	13	7	0	0	0	
सेलम	20	29	4	0	0	0	
त्रिची	39	110	46	10	0	14	
विरडुनगर	39	110	46	10	6	18	

आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80
वर्षा मि.मी					